कवि सुदामा पांडेय धूमिल का जीवन परिचय

- सुदामा पांडेय 'धूमिल' का जन्म 9 नवंबर 1936 को वाराणसी के निकट गाँव खेवली में हुआ था। उनके पूर्वज कहीं दूर से खेवली में आ बसे थे। धूमिल के पिता शिवनायक पांडे एक मुनीम थे व इनकी माता रजवंती देवी घर-बार संभालती थी। जब धूमिल ग्यारह वर्ष के थे तो इनके पिता का देहांत हो गया। आपका बचपन संघर्षमय रहा।
- धूमिल का विवाह १२ वर्ष की आयु में मूरत देवी से हुआ।
- १९५३ में जब आपने हाई स्कूल उत्तीर्ण किया तो आप गांव के पहले ऐसे व्यक्ति थे जिसने मैट्रिक पास की थी। आर्थिक दबावों के रहते वे अपनी पढ़ाई जारी न रख सके। स्वाध्याय व पुस्तकालय दोनों के बल पर उनका बौद्धिक विकास होता रहा।

- रोजगार की तलाश 'धूमिल' को कलकत्ता ले आई। कहीं ढँग का काम न मिला तो लोहा ढोने का काम कया व मजदूरों की ज़िंदगी को करीब से जाना। इस काम की जानकारी उनके सहपाठी मित्र तारकनाथ पांडे को मिली तो उन्होंने अपनी जानकारी में उन्हें एक लकड़ी की कम्पनी (मैसर्स तलवार ब्रदर्ज़ प्रा. लि० में नौकरी दिलवा दी। वहाँ वे लगभग डेढ वर्ष तक एक अधिकारी के तौर पर कार्यरत रहे। इसी बीच अस्वस्थ होने पर स्वास्थ्य-लाभ हेतु घर लौट आए। बीमारी के दौरान मालिक ने उन्हें मोतीहारी से गौहाटी चले जाने को कहा। 'धूमिल' ने अपने अस्वस्थ होने का हवाले देते हुए इनकार कर दिया। मालिक का घमंड बोल उठा, "आई एेम पेइंग फॉर माई वर्क, नॉट फॉर योर हेल्थ!"

- 'धूमिल' के स्वाभिमान पर चोट लगी तो मालिक को खरी-खरी सुना दी,"बट आई एेम वर्किंग फॉर माई हेल्थ, नॉट वोर योर वर्क।"

- फिर क्या था साढ़े चार सौ की नौकरी, प्रति घन फुट मिलने वाला कमीशन व टी. ए, डी. ए....'धूमिल' ने सबको लात लगा दी। इसी घटना से 'धूमिल' पूंजीपतियों और मज़दूरों के दृष्टिकोण व फ़ासले को समझे। अब उनका जनवादी संघर्ष उनकी कविता में आक्रोश बन प्रकट होने वाला था। धूमिल को हिंदी कविता के संघर्ष का कवि कह। जाता है।

- १९५७ में 'धूमिल' ने कांशी विश्वविद्यालय के औद्योगिक संस्थान में प्रवेश लिया। १९५८ में प्रथम श्रेणी से प्रथम स्थान लेकर 'विद्युत का डिप्लोमा' लिया। वहीं विद्युत-अनुदेशक के पद पर नियुक्त हो गए। फिर यही नौकरी व पदोन्नति पाकर वे बलिया, बनारस व सहारनपुर में कार्यरत रहे। १९७४ में जब वे सीतापुर में कार्यरत थे तो वे अस्वस्थ हो गये। अपनी स्पष्टवादिता व अखड़पन के कारण उन्हें अधिकारियों का कोपभाजन होना पड़ा। उच्चाधिकारी अपना दबाव बनाए रखने के कारण उन्हें किसी न किसी ढँग से उत्पीड़ित करते रहते थे। यही दबाव 'धूमिल' के मानसिक तनाव का कारण बन गया। अक्टूबर १९७४ को असहनीय सिर दर्द के कारण 'धूमिल' को काशी विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज में भर्ती करवाया गया। डॉक्टरों ने उन्हें ब्रेन ट्यूमर बताया । नवंबर १९७४ को उन्हें लखनऊ के 'किंग जार्ज मेडिकल कॉलेज में भर्ती करवाया गया। यहाँ उनके मस्तिष्क का ऑपरेशन हुआ लेकिन उसके बाद वे 'कॉमा' में चले गए और बेहोशी की इस अवस्था में ही १० फरवरी १९७५ को वे काल के भाजक बन गए।

- धूमिल की साहित्यिक कृतियाँ:
- अभी तक धूमिल के चार काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें सम्मिलित हैं -
- उपरोक्त कृति 'संसद से सड़क तक' का प्रकाशन स्वयं 'धूमिल ने किया था व शेष का प्रकाशन मरणोंपरांत विभिन्न प्रकाशकों द्वारा किया गया।

- **रोटी और संसद**
- *- सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'*
- एक आदमी
  रोटी बेलता है
  एक आदमी रोटी खाता है
  एक तीसरा आदमी भी है
  जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
  वह सिर्फ़ रोटी से खेलता है
  मैं पूछता हूँ -
  'यह तीसरा आदमी कौन है ?'
  मेरे देश की संसद मौन है

रोटी और संसद

धूमिल इस कविता के माध्यम से समाज के बहुत बड़े सत्य को उदघाटित करते हैं। प्रश्न पूछता हुआ आदमी खतरनाक होता है। वह आपको कटघरे में खडा करता है, जिरह करता है और आपकी समाज सम्मत उपदेयता को रेखांकित करता है। देश जब आजाद हुआ उन दिनों यह रोटी बेलने वाला आदमी किसान हुआ करता था, यह आदमी आज आम मजदूर या सर्वहारा के नाम से जाना जाता है जो कि रोटी पैदा कर रहा है। ये रोज नए सिरे से कुआं खोदने की स्थिति में जी रहे लोगबाग हैं। आबादी का एक बडा हिस्सा राष्ट्रीय चिंतन के दायरे से बाहर है।

- इनकी चिन्ता की जाती है तो सिर्फ औपचारिक खानापूर्ति के लिहाज से खासकर चुनाव के दिनों में। रोजगार गारन्टी योजना, स्वर्ण जयंती रोजगार योजना, पढ़ो- लिखो योजना चलाकर इनसे तटस्थता का यह खेल संसद में बैठा हुआ आदमी खेलता है। दूसरा रोटी खाता है (यह उपभोक्ता है) इसके लिए मार्क्स ने कम्युनिस्ट घोषणा पत्र में लिखा था-"पूंजीवादी वर्ग ने हर पेशे की इज्जत उतार ली है।" अब तक लोग जिन पेशों को श्रध्दा से देखते और उनका आदर करते थे, उनका गौरव खत्म हो गया। उसने डॉक्टर, वकील, पुरोहित, कवि, वैज्ञानिक को पगार पाने वाला मजदूर बना दिया।" तीसरा जो रोटी से खेलता है वह है- मुनाफाखोर, पूंजीपति वर्ग, सामन्तशाह।

- कवि कविता नहीं लिखता वह रोजमर्रा की भाषा में पूछता है, यह तीसरा आदमी कौन है? ऐसा लगता है सामान्यजन के बीच से कोई खडा होकर जनता के पक्ष में लड पडा हो- मैं पूछता हूं यह तीसरा आदमी कौन है? ऐसे आदमी को हमारे जांजगीर जिला-जनपद छत्तीसगढ में 'हितवा' कहा जाता है। पढे लिखे सुधिजन ऐसे आदमी को कवि कहा करते हैं।
- हिन्दी भाषी क्षेत्र में कबीर ने मध्यकालीन धर्म और निरंकुशता की राजनीति को बीच चौबट्टे पे खडा किया। भारतेन्दु ने आयातित अंग्रेजकालीन भारतीय सामंती शोषण की राजनीति का भाण्डाफोड किया। निराला ने हिन्दी के जातीय परम्परा की मान रक्षा और विकास का कार्य अपने ढंग से किया। वहीं मुक्तिबोध ने स्वतंत्रोत्तर भारतीय परिवेश में नवनिर्मित प्रजातांत्रिक राजनीति के मुखौटे को (चांद का मुंह टेढाअंधेरे में) खोला है तो कविता 'रोटी और संसद' में कवि धूमिल अराजक राजनीति के सामंती व पूंजीवादी मुखौटे को संसद से उठाकर सडक़ तक ले आए। जो आज तक यथावत संसद और सडक़ के मध्य एक दूसरी प्रजातंत्र की तलाश में ज्यों का त्यों रखा हुआ है।

- लोग आते हैं गरीब की रोटी खाते हैं और संसद में आसीन होकर राजनीति से निरंतर बोलते हैं। राजनीति को सत्ता की साधना और अर्थशास्त्र को बाजार के तर्क शास्त्र शासित वैध लूट में तब्दील कर धर्म, जाति, भाषा, सम्प्रदाय, लूट-हत्या, बलात्कार, भय, आतंक का दर्शन बांटते संसद से सडक़ तक अपनी-अपनी कुर्सी की रक्षा में प्रतिबध्द मुस्कुराकर पूछना नहीं भूलते- कहो तुम कौन हो? तुम्हारा पार्टीगत गोत्र क्या है? तुम्हारा झंडा कौन सा है, धार्मिक विश्वास कैसा? राजनीति लेख किस गधे का है जरा कहना, तुम किस टाइप के आदमी हो? प्रमाणीकरण के लिए तुम्हारा हलफनामा कौन देगा, तुम पक्के बेईमान हो इसकी गारंटी क्या है?

- धूमिल काव्य का पहला आदमी जाहिर तौर पर मोचीराम, लौहसाय, पलटू जैसा आम आदमी है जो रोटी बेलता है और आए दिन आत्महत्या करने को मजबूर है। अपने समय की जन आकांक्षाओं से प्रतिबध्द कवि पतनशील बुर्जुआ संस्कृति को नंगा करने के लिए ही प्रश्न करता है- यह तीसरा आदमी कौन है? जो रोटी बेलता है (किसान, मजदूर (उत्पादक)) है। जो रोटी खाता है यह वह उपभोक्ता वर्ग है- एक अदद नौकरी के लिए, एक प्याली (चाय) शराब, एक गुलाबी खुशबू के लिए, मुनाफाखोरी में हिस्सा पाने के लिए अक्सर अपनी रचनात्मक जोश बेच देता है। ये ऐसे मध्यम वर्ग हैं जिन्हें गुलाम रहने की आदत सी होती है।

- तीसरा जो रोटी बेलता है न खाता है (मुनाफाखोर की सामंतशाह व पूंजीपति) जो रोटी से खेलता है। धूमिल की रचना से दिन-प्रतिदिन अराजक हो रहे राजनीति का प्रतिफल प्रजातंत्र में नीहित भ्रष्टाचार उसे फासीवाद की ओर ले जा रहा है जिसकी परिणति तानाशाही प्रजातांत्रिक अधिनायकवाद में होती है। तीसरा आदमी इसी का प्रतिनिधि है। प्रस्तुत कविता स्वतंत्रोक्तर भारतीय राजनीति और संविधान का पूंजीवाद से कदमताल करते चले जाने का एक छोटा किन्तु पुख्ता उदाहरण है। यही कारण है कि धूमिल प्रजातंत्र की तलाश में मुनासिब कार्यवाही करते कहना नहीं भूलते- 'कल सुनना मुझे।' क्योंकि कवि को इस बात का पूरा अहसास है कि जानवर होने के लिए जिन्हें स्वतंत्र भारत के इतने दिन लग गए, उन्हें आदमी बनने में जाने कितना वक्त लगे। इसी से कविता की कालजयी भूमिका तय होती है।

- आज पूंजीवाद उत्पादक किसान की सामूहिकता को तोड़कर उसे क्षूद्र मानव (मजदूर) बना दिया है। फिर उसे मनुष्य से जन्तु में तब्दील करने की जिद ने उसकी यथार्थवादी सामाजिक, ऐतिहासिक विकास की सारी भूमिका को समाप्त कर रोटी खाते दूसरे आदमी, पेटी बुर्जुआ के साथ बंधक मजदूर बनाकर पूंजीवादी जहनियत का पोषक बना दिया है और इसके मूल में है रोटी। इसे पूंजीपति सामंतशाह पैदा नहीं कर सकता, चालाकी से दूसरे आदमी के साथ केवल रोटी को छीन सकता है। रोटी (उत्पादन) के तमाम क्षेत्रों को अधिग्रहित कर पहले व दूसरे आदमी को पशु बनाए रखने के लिए एक से बढ़कर एक चमत्कार बांटता है।

- चूंकि कविता भाषा में आदमी होने की तमीज सिखाता है, पूंजीपति वर्ग रोटी से खेलता जनता को हर बार भटकाने से बाज नहीं आता और इसी से कविता की सर्वदेशीय-सर्वदेशीय कालजयी भूमिका मनुष्य की दुनिया में बनी रहेगी, क्योंकि जड बदलेगा किन्तु न जीवन। जब तक कि जनता भाषा विहीन पशु (गूंगी) नहीं हो जाती।

- जनप्रतिनिधि सडक़ से चलकर जरूर आते हैं, किन्तु संसद में बैठते ही उनका वर्ग, जाति, भाषा सब कुछ बदल जाता है। भारतीय प्रजातांत्रिक व्यवस्था में धूमिल चुनाव व्यवस्था की पोल खोलकर रख देता है। आखिर यह तीसरा इतना सक्षम, इतना आतंकी, इतना विशिष्ट हो गया है कि इसके विरुध्द इस देश का संसद तक मौन है। और जहां की संसद मौन है वहां- यह तीसरा कोन है? पूछते ही यह तीसरा आदमी गरीब की रोटी से खेलता दृष्टिगत होता है।